RNI DELPRA / 2015 / 59918 ISSN 24545252 Year 5 Vol.10 July-Dec 2019

णमो जिणाणं

पागद – भासा pagada bhasa

प्राकृत भाषा पाउअ-भासा पाइय-भासा PRAKRIT LANGUAGE

The First News Paper In Oldest Prakrit Language , Hon.Editor Prof. Dr Anekant Kumar Jain

रट्ठिय- सिक्खा णीदिए (2019) पागद-भासा

भारद-सरकारस्स णूयण रट्ठिय सिक्खा णीदिए (2019) (अज्झाय बिंदु 224,पिट्ठ 546) पागद-भासाअ णूयण संठाणस्स णिम्माणस्स पत्थावं अत्थि । माणणीय पहाणमंतिओ सिरी णारिंद मोदिओ तहा सिक्खा मंतिओ सिरी रमेस णिसंकस्स 'पागद-भासा' पक्खदो अहिणंदणं ।

पागद-रट्ठपइ- पुरक्कारं 2019 घोसिदं

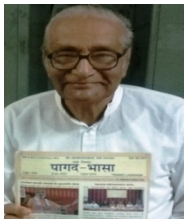

पागद-वरिट्ठ-रट्ठपइ- पुरक्कारं 2019 जयपुरस्स वरिट्ठ मणीसि पागद विउसं पो.कमलचंदो सोगाणी तहा जुव-पागद-रट्ठपइ- पुरक्कारं 2019 डॉ.आसीस जइण किदे घोसिदं अत्थि |

पागद विज्जा सिक्खा सिविरस्स आयोजणं

खोड़ी पागद जइण विज्जा पाठसाला समिदि पक्खतो सिरी संतिजाह दिअम्बर जइण अतिसय खेत्तम्मि पागद-विज्जा सिक्खा आयोजणं होसी । मुणी पणम्म सायरस्स आसीवादेण सिविरस्स आयोजणं डॉ.अजेस जइण, उसह जइण ,रिउ जइण, मोणिआ जइण, सीया जइण ,णिइआ जइण, कविता-जइण, पलक-जइण तहा सअल-दिअम्बर-जइणसमाजेहिं किदं। - Dr Ajesh Jain Rewari

पागद-भासा-मसीहस्स समाहिमरणं

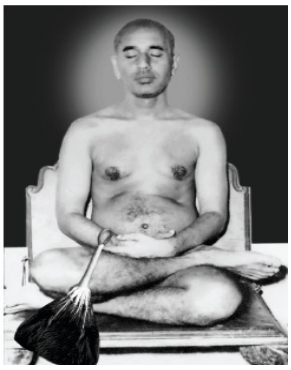

पागद-भासा इइ पढमो समायरपत्तस्स पेरगो पागद-भासा-मसीहो परमपुज्ज-आयरिय-विज्जाणंदो मुनिरायस्स 22/09/2019 दिणंकम्मि कुण्डकुण्डभारदी ठाणे समाहिमरणं होहि | परमपुज्ज- आयरिय-विज्जाणंदो आजीवणं पागद-भासाअ संरक्खणं किदं | सो13 अप्रैल 2014 महावीरजम्मकल्याणक-सुहअवसरम्मि आयरिय वड्ढमाणसरेण सह कुण्डकुण्डभारदी ठाणे 'पागद-भासा'समायारपत्तस्स पढमो अंअस्स विमोयणं वि किदं |

पंचगुरु भत्ती

मणुयामरजिणदेवा-पूजिद-, इंदणरिंदा करंति सेवा।-
अट्ठादस दोसा विवज्जियं, णमो णमो सिरि अरिहंताणं ।।1।।
अट्ठकम्मसुद्धप्पा-विरहिद-, गुणपरिपुण्णं सहजं परमप्पा।
पुरिसायारअणुपमं संतं-, णमो णमो सिद्धाणं भयवं।।2।।
पंचाचारं परायणं सेट्ठा , णाणं झाणं तवं संजमं जेट्ठा ।
दिक्खा सिक्खा दायाराणं, णमो णमो सिरिआइरियाणं।।3।।
बारहअंगे चौदहपुव्वे पढइ पढावइ सग परे सत्थे-।
रयणत्तय जुत्ता मुणिमाणं, णमो सया हि उवज्झायाणं ।।4।।
दंसणपरिपुण्णं-चरित्त-णाण-, विसयासावज्जिय धणधण्णं ।
ससरीरी सिद्ध मिव समणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।5।।
अरिहा सिद्धा सूरया पाठय मुणि गुणपुण्ण ।
पंचपरमगुरुणं णमो सहजसंत सपुण्ण।।

Acharya Suneel Sagar ji

Editorial

पागद-सुत्ति-पंचगं

पागद – साहिच्चम्मि बहु पेरगो सुत्तिणो सन्ति | पंचगं सुत्तिणो पत्थुदं सन्ति -

धणत्तो रहिदो अइ गुणजुत्तस्स वि अत्थ चिंदा दूरो ण हवइ | जथा लक्ख दीवा वि सुज्जाभावे दिणवय पयासो ण करेंति | जिणेसरसूरि गाहारयणकोसम्मि (गा.123)उत्तं –

गुणगरुयाण वि धणवज्जियाण न हवंति चिंतिया अत्था ।
लक्खेण वि दीवाणं न दिणं दिणनाहविरहम्मि ।।1।।

(धन से रहित अति गुणवानों की भी अर्थ चिंता दूर नहीं होती। जैसे, लाखों दीया सूर्य के अभाव में दिन की तरह उजाला नहीं कर सकते हैं।)

उप्पज्जंति तहिं चिय, वियसंति तहिं, तहिं विलिज्जंति ।
पुण्णसरे कमलाइं व मणोरहा रोरहियम्मि ।।2।।

(सम्पूर्ण सरोवर में कमल की भांति निर्धन के मन में स्थित इच्छाएं वहीं उत्पन्न होती हैं, वहीं विकसित होती हैं और वहीँ विलीन हो जाती हैं।) (गाहारयणकोस, गा.158)

इंदियसोक्खणिमित्तं सद्धाणादीणि कुणइ सो मिच्छा।
तं पिय मोक्खणिमित्तं कुव्वंतो भणइ सद्दिट्ठी।।3।।

(इन्द्रिय सुख की प्राप्ति के लिये श्रद्धान आदि जो करता है, वह मिथ्यादृष्टि है; वही श्रद्धान आदि मोक्ष के निमित्त करता हुआ सम्यग्दृष्टि होता है।) (माइल्लधवल कृत नयचक्र 333)

विणएण विप्पहीणस्स हवदि सिक्खा णिरत्थिया सव्वा ।
विणओ सिक्खाए फलं विणयफलं सव्वकल्लाणं।।4।।

(विनय से हीन मनुष्य की सम्पूर्ण शिक्षा निरर्थक है। विनय शिक्षा का फल है और विनय का फल सर्व कल्याण है।)

(आचार्य वट्टकेर, मूलाचार 385)

धम्मो चिय तुह जणओ जणणी तुह जीव ! सव्वजीवदया ।।
तुह बंधवो विवेगो परमं मितं च सम्मतं ।।5।।

(हे जीव ! धर्म ही तुम्हारा पिता है, सभी जीवों के प्रति दया ही तुम्हारी माता है, विवेक ही तुम्हारा भाई है और सम्यक्त्व ही तुम्हारा मित्र है।)(आसड कवि,विवेकमंजरी 130)

Prof.Dr Anekant Kumar Jain
Head-Deptt.of Jainphilosophy,Shri Lalbahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth,New Delhi-16

सिद्ध-भत्ति

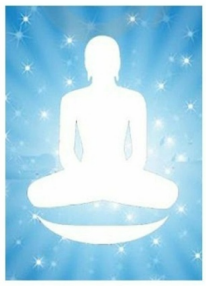

असरीरा जीव-घणा,उवजुत्ता
दंसणे य णाणे य ।
सायारमणायारा,लक्खणमेयं तु
सिद्धाणं ।। 1।।

मुलुत्तर-पयडीणं,बंधोदय-सत्त-कम्म-उम्मुक्का ।
मंगल-भूदा सिद्धा,अट्ठ-गुणातीद-संसारा ।। 2 ।।

अट्ठ-विह-कम्म-वियला,सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा ।
अट्ठ-गुणा किदकिच्चा,लोयग्ग-णिवासिणो सिद्धा ।। 3 ।।

सिद्धा णट्ठट्ठ-मला,विसुद्ध-बुद्धी य लद्ध-सब्भावा ।
तिहुयण-सिर-सेहरया,पसीयंतु भडारया सव्वे ।। 4 ।।

गमणागमण-विमुक्के,विहडिय-कम्मट्ठ-पयडि-संघाए ।
सासय-सुह-संपत्ते,ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं ।। 5 ।।

जय-मंगल-भूदाणं,विमलाणं णाण-दंसण-मयाणं ।
तइ-लोय-सेहराणं,णमो सया सव्व-सिद्धाणं ।। 6 ।।

सम्मत्त-णाण-दंसण-,वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं ।
अगुरुलहुमव्वावाहं,अट्ठ-गुणा होंति सिद्धाणं ।। 7 ।।

तव-सिद्धे णय-सिद्धे,संजम-सिद्धे चरित्त-सिद्धे य ।
णाणम्मि दंसणम्मि य,सिद्धे सिरसा णमंसामि ।। 8 ।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! सिद्ध-भत्ति-काउस्सग्गो कओ, तस्सालोचेउं। सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचारित्त-जुत्ताणं, अट्ठविह-कम्म-विप्पमुक्काणं, अट्ठगुण-संपण्णाणं, उड्ढ-लोय-मत्थयम्मि पइट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय-सिद्धाणं, संजम-सिद्धाणं, चरित्त-सिद्धाणं, अतीताणागद-वट्टमाण-कालत्तय-सिद्धाणं, सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइ-गमणं, समाहि-मरणं, जिण-गुण-संपत्ति होउ मज्झं ।

Scan this code and listen Siddha Bhakti

- Acharya Kundkunda

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर छाणी समाधि हीरक महोत्सव पर आयोजित

अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

अंतिम तिथि 31 जनवरी, 2020

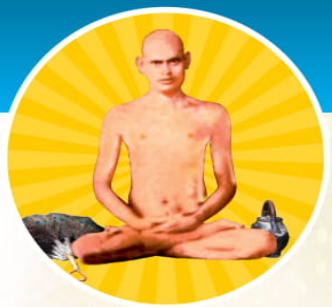

तपोनिधिसंत परमपूज्य
आचार्य श्री 108 शांतिसागर 'छाणी' जी महाराज
चर्याकाल : 1923–1944

प्रेरणास्रोत : षष्ठ पट्टाचार्य
सराकोद्धारक आचार्य श्री 108
ज्ञानसागर जी महाराज

प्रथम वर्ग (युवा वर्ग) पात्रता : आयु 45 वर्ष से कम

विषय : उत्तर भारत मे दिगंबर मुनि परंपरा के सुदृढ़ीकरण मे छाणी परंपरा के साधुओं का योगदान

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार	सांत्वना पुरस्कार
₹ 21,000	₹ 11,000	₹ 5100	₹ 2100

द्वितीय वर्ग (वरिष्ठ वर्ग) पात्रता : 45 वर्ष या 45 वर्ष से अधिक

विषय : जैन परंपरा में समाधि और सल्लेखना का महत्व

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार	सांत्वना पुरस्कार
₹ 21,000	₹ 11,000	₹ 5100	₹ 2100

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर 'छाणी' जी महाराज एवं उनकी आचार्य परंपरा से संबंधित जानकारी हेतु विजिट करें www.shantigyan.com अथवा संपर्क करें 9734890469

लेख भेजने का पता

डॉ. अनुपम जैन
ज्ञानछाया
डी-14, सुदामानगर, इंदौर (मध्य प्रदेश) 452009
फोन : 09425053822;
ई-मेल : anupamjain3@rediffmail.com

श्री नीरज कुमार जैन
यू जी एस पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड
ए-5 उद्योगपुरम, मेरठ (उत्तर प्रदेश) 250103
फोन : 0121 2441020;
ई-मेल jnneeraj@gmail.com

नियम व शर्तें

1. लेख की अधिकतम शब्द सीमा 4000 शब्द है।
2. लेख की भाषा हिंदी या अंग्रेजी होनी चाहिए।
3. लेख A4 आकार के कागज पर सुवाच्य हस्तलिपि में या डबल स्पेस में कंपोज कराकर दो प्रतियों में भेजना अपेक्षित है।
4. प्रतियोगी द्वारा अपने आयु प्रमाण-पत्र की फोटो प्रति भेजना आवश्यक है। महिला, पुरुष का भेद नहीं है।
5. लेख के साथ एक पृष्ठ पर अपना पूरा नाम, पत्राचार का पता, मोबाइल नंबर अवश्य लिखकर भेजें।
6. लेख मौलिक होना चाहिए। इस आशय का शपथ-पत्र कि लेख मौलिक है, साथ में संलग्न करना अपेक्षित है।
7. प्राप्त लेखों को प्रकाशित करने अथवा अन्य प्रकार से उपयोग करने का पूर्ण अधिकार आयोजन समिति के पास होगा।
8. किसी भी विवाद की स्थिति में आयोजन समिति का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा, जिसे किसी भी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

आयोजक

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शांतिसागर 'छाणी' समाधि हीरक महोत्सव आयोजन समिति

पागद-भासाए संवादगो आयरिय अणेयंत जइणो सम्माणिदं

पागद-भासा -पाइय-भासाए पगासिदो एगो पढमो समायारपत्तं अत्थि। पागद-भासाए संठावगो संवादगो आयरिय अणेयंत जइणो विगअ काले बहुसम्माणं पुरक्कारं च लद्धं।

(1)कर्णाटकपंते सवणबेलगोला खेत्ते सिरी कम्म जोई चारुकित्ती भटारगसामी महोअअं पागद-भासाअ महामत्थाहिसेसं विसेसंकस्स विमोअणं काले संवादगो डॉ.अणेयंत जइणं विसिट्ठ-सम्माणं-पदत्तं । ज्वालामालिनी सिरी खेत्तस्य भट्टारगो, हुमचा सिरी खेतत्तस्स भटारगो, मूडबिद्री सिरी खेत्तस्स भटारगो अवि विसिट्ठ सम्माणं पदत्तं।

(2)अप्पसंखक-आयोगो दिल्लीसरकारो आयरिय डॉ.अणेयंत जइणं सव्वसेट्ठ-सिक्खगो सम्माणं दत्तं।

(3)अहिंसा इन्टरनेशनल पत्तकारिआ पुरक्कारं कुण्दकुण्द भारदी णव दिल्ली पांगणे आयरिय विज्जाणंद तहा आयरिय सुयसागरं साणिज्झे सिरी अणिल जइण काठमांडु महोअयेण पागद-भासाए संवादगो डॉ.अणेयंत जइणं सम्माणिदं।

(4)उसहांचलो गजिआबादो णयरे मांकोसलस्स साणिज्झे उसहदेवो पुरक्कारं हेमराज-जइणेण डॉ.अणेयंत जइणं पदत्तं ।(5) सो खमावाणी अवसरम्मि फ़रीदाबाद जइण समाजेण विसिट्ठ सम्माणं वि लद्धं। - **Dr Indu Jain,New Delhi**

Declaration As Per Rule
Printed,Published And Owned By Ruchi Jain And Printed At Sonu Printing Press,Munirka,New Delhi-67 And Published At JIN FOUNDATION,A93/7A,Behind Nanda Hospital,Chattarpur Extension,New Delhi-110074,
Editor Dr Anekant Kumar Jain,
Email-pagadbhasa001@gmail.com, Contact-9711397716

भरतेस थुदि

छक्खंड णरेसं य सत्वेग भावं,
सुह जेण लद्धं य विराय भावं।
विस्सदेवदेवं चक्केस णाहं,
णमह भारतेसं परं वीयरागं ।।1।।

णंदा सुणंदा आदीस पुत्तं,
बाहुबली भाय हे चक्कधीसं ।
चरमदेहधरणं अजोज्झा णरेसं,
णमह भारतेसं परं वीयरागं ।।2।।

सअअ मुत्तिं रमारमंतं,
बुद्धं सुद्धं सआ सुहदत्तं ।
अट्ठापदे झाणयुत्तं य सततं ,
णमह भारतेसं परं वीयरागं ।।3।।

भजं भारतेसं सया धम्मरुवं,
सुद्धोवयोगं आणंद जुत्तं ।
विसद-णाणदंसणचरित्तं युत्तं,
णमह भारतेसं परं वीयरागं ।।4।।

- Acharya Vishad Sagar Ji

Printed Matter Posted Under P&T Guide Sec.114(7)

To

.....

.....

.....

.....

If undelivered please return to
JIN FOUNDATION,A93/7A,Behind Nanda Hospital,Chattarpur extension,New Delhi-110074